Tender Heart High School, Sector- 33-B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - एकांकी संचय

पाठ - 4 'सूखी डाली' (एकांकी) लेखक - उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या 39 पर दिए पाठ-4 'सूखी डाली' नामक एकांकी को पढ़ेंगे और समझेंगे।

बच्चो ! आज हम सूखी डाली' नामक एकांकी के शेष भाग को पढ़ने जा रहे हैं इसलिए आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक एवं एक उत्तर-पुस्तिका भी निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे, जिनके उत्तर आप पाठ को समझकर ही दे पाएँगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो ! पिछले सप्ताह हमने इस एकांकी को पहले दृश्य तक समझ लिया था। आगे बढ़ने से पहले पहले दृश्य को संक्षेप में समझ लेते हैं। 'सूखी डाली' एकांकी में सयुक्त परिवार की कथावस्तु को सँजोया गया है। इस एकांकी में दादा जी मूलराज घर के मुखिया हैं। उनकी आयु 72 वर्ष है। दादा जी अपने परिवार को एक बरगद के पेड़ की भाँति समझते हैं और परिवार के हर एक सदस्य को बरगद के पेड़ से जुड़ी डालियाँ। वे अपने परिवार के किसी एक सदस्य (डाली) को पृथक नहीं देख

सकते। दादा जी ने बड़ी सूझ-बूझ और बुद्धिमानी से अपने परिवार को एक वट वृक्ष की भाँति एकता के सूत्र में बाँध रखा है, परन्तु जब से छोटी बहू बेला इस परिवार में आई है तबसे थोड़ी अशांति का वातावरण उपस्थित होने लगा है। बेला ग्रेजुएट है तथा इस परिवार में सबसे अधिक पढ़ी-लिखी है। वह एक संपन्न परिवार से आई है, इसलिए अपने मायके के सामने किसी को कुछ नहीं समझती। बड़ी बहू के पूछने पर इंदु बताती है कि छोटी बहू ने रजवा को नौकरी से निकाल दिया है। बेला ने दस वर्षों से काम करती मिन्नानी रजवा को यह कहकर काम से हटा दिया कि उसे काम करने का सलीका नहीं आता। बेला के व्यवहार से बड़ी बहू, इंदु, छोटी भाभी आदि सभी परेशान हैं। तभी मँझली बहू बताती है कि छोटी बहू (बेला) हमें ही नहीं अपने पति परेश को भी कुछ नहीं समझती। वह अपने पति परेश को भी घर के पुराने फ़र्नीचर को लेकर खूब सुनाती है। परेश के लाख समझाने पर भी उसने अपने कमरे के सारे फर्नीचर को सड़ा-गला और पुराना बताकर कमरे से बाहर निकाल दिया। परेश की एक न चली। तब इन्दु कहती है कि उनकी केवल जबान ही चलती है, हाथ नहीं। दादा जी ने कुछ कपड़े धोने के लिए दिए थे, वे बिना धुले गुसलखाने में गल रहे हैं। छोटी भाभी इंदु से वे कपड़े धोने के लिए कहती है। इस प्रकार घर की महिलाएँ छोटी बहू की हँसी उड़ाती हैं।

बच्चो! अब हम एकांकी की पृष्ठ संख्या 48 पर दिए दूसरे दृश्य को समझने का प्रयास करते हैं। पर्दा उठते ही दादा जी तख्त पर तकिए के सहारे बैठे हुक्का पीते दिखाई दे रहे हैं। उनका मँझला बेटा कर्मचन्द उनके पास बैठकर उनके पाँव दबा रहा है। दादा जी हुक्का पीते-पीते परिवार के बच्चों को अहाते (चारदीवारी) में खेलते हुए देख रहे हैं। स्नानघर से नल के ज़ोर-ज़ोर से चलने की आवाज़ें आ रही हैं। कर्मचन्द क्रोध से दादा जी के पोते

जगदीश से कहता है कि दोपहर के भोजन के बाद दादा जी को अब आराम करने दो। तभी दादा जी बच्चों को पेड़ की टूटी डाली को आँगन की मिट्टी में दबाकर उसे पानी देते हुए देखते हैं। बच्चों की इस नादानी को देखकर पहले तो वे हँसते हैं। वे कर्मचन्द से कहते हैं कि ये बच्चे इस बात को नहीं जानते कि पेड़ की टूटी डाली जल देने से नहीं पनपती। वे बताते हैं कि मैं कहा करता हूँ न कि एक बार वृक्ष से जो डाली टूट गई, उसे लाख पानी दो, उसमें वह सरसता नहीं आएगी। हमारा यह परिवार भी बरगद के इस महान पेड़ की भाँति है। दादा जी बरगद के पेड़ को महान इसलिए कह रहे हैं क्योंकि यह वृक्ष वर्षों से उन्हें शीतलता और छाया प्रदान कर रहा है। इसकी डालियों में सैंकड़ों की संख्या में पक्षियों ने अपने घोंसले बना लिए हैं। जिस प्रकार पेड़ से यदि कोई डाली टूटकर अलग हो जाती है तो उसे फिर से लगाने का या पानी देने का कितना भी प्रयत्न क्यों न किया जाए, उसमें पहले के समान हरियाली और सुन्दरता नहीं आ सकती। दादा जी बरगद के पेड़ से अपने परिवार की तुलना कर रहे हैं। उनका परिवार भी बरगद के वृक्ष के समान पुराना है। वे नहीं चाहते कि उनका यह परिवार छिन्न-भिन्न हो।

कर्मचन्द पितृ भक्त शांत स्वभाव तथा पिता जी का आज्ञाकारी पुत्र है। वह घर की समस्याओं को पिता जी के सम्मुख रखकर उनका समाधान खोजने की कोशिश करता है और दादा जी से कहता है कि शायद अब इस पेड़ की एक डाली टूटकर अलग हो जाए। दादा जी के पूछने पर कि कौन अलग हो रहा है? तब कर्मचन्द ने उन्हें बताया कि शायद परेश परिवार से अलग होना चाहता है। दादा जी ने समझाया कि जैसे ही कोई समस्या उठ खड़ी हो तो उसका तुरंत समाधान कर देना चाहिए। जिस प्रकार हल्की-सी खरोंच पर यदि तत्काल दवाई न लगाई जाए तो वह बड़ा घाव बन जाता है फिर लाख बार मरहम लगाने पर भी

ठीक नहीं होता। इसी प्रकार समस्या का समाधान तुरंत न करने पर वह इतनी बड़ी हो जाती है कि उसका समाधान नहीं किया जा सकता। कर्मचन्द ने दादा जी को छोटी बहू (बेला) के विषय में बताया कि उसके मन में मायके का लेकर दर्प (घमंड) की भावना आवश्यकता से कुछ ज्यादा ही है। वह अपने मायके को बड़ा समझती है और इस घर को घृणा की दृष्टि से देखती है।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए विराम लेकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न 1. 'एक बार पेड़ से जो डाली टूट गई, उसे लाख पानी दो उसमें सरसता न आएगी' - से दादा जी का क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 2. कर्मचन्द ने दादा जी को किसके बारे में बताया?

प्रश्न-3 दादा जी ने शिकायत को तुरंत दूर करने को क्यों कहा?

बच्चो! आशा करती हूँ कि आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। उन प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं:-

उत्तर 1. इससे दादा जी का यह तात्पर्य है कि जिस प्रकार पेड़ से यदि कोई डाली टूटकर अलग हो जाती है तो उसे फिर से लगाने का या पानी देने का कितना भी प्रयत्न क्यों न किया जाए उसमें पहले के समान हरियाली और सुन्दरता नहीं आ सकती। दादा जी के अनुसार उनका परिवार बरगद के वृक्ष के समान पुराना है। वे अपने परिवार को छिन्न-भिन्न देखना नहीं चाहते।

उत्तर-2 कर्मचन्द ने दादा जी को बताया कि छोटी बहू बेला के मन में घमण्ड आवश्यकता से अधिक है। वह अपने मायके के आगे इस परिवार को कुछ नहीं समझती और इस घर को घृणा की दृष्टि से देखती है।

उत्तर-3 दादा जी ने किसी भी शिकायत को तुरंत दूर

करने को इसलिए कहा क्योंकि हल्की सी खरोंच का यदि तुरन्त इलाज न किया जाए तो वह नासूर में बदल जाती है फिर लाख मरहम लगाने से भी ठीक नहीं होती।

बच्चो! अब एकांकी को आगे बढ़ाते हुए पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं। दादा जी का मानना है कि बहू परिवार से तभी पृथक् होना चाहेगी जब उसे घृणा के बदले घृणा दी जाएगी। यदि उसे घृणा के बदले स्नेह मिलेगा तो उसकी सारी घृणा लुप्त हो जाएगी। इसलिए घृणा को घृणा से नहीं मिटाया जा सकता। दादा जी ठूँठे वृक्ष का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि कोई भी परिवार केवल बड़ा होने से महान नहीं हो जाता। परिवार का बड़प्पन इसी बात में है कि वह उसमें रहने वाले सभी सदस्यों को स्नेह दे, उनकी समस्याओं को शांति से सुलझाए और सबको प्रसन्न रखे।

तभी परिवार का ही एक बच्चा भाषी दादा जी के पास मल्लू और जगदीश की शिकायत करते हुए कहता है कि उन्होंने मेरा वट का वृक्ष उखाड़ दिया। दादा जी बच्चों के झगड़े को समाप्त करने के लिए कर्मचंद को भेज देते हैं। कर्मचन्द के जाते ही परेश नीची नज़रें किए प्रवेश करता है। दादा जी परेश से कहते हैं कि तुम्हारी बहू ने यदि मेरे कपड़े धो डाले हैं, तो ले आओ। मैं तुम्हें बुलाने ही वाला था। मैंने तुमसे कुछ बात करनी है। परेश चुपचाप दादा जी के पास बैठ जाता है। दादा जी, परेश से कहते हैं कि मुझे कर्मचन्द के द्वारा अभी मालूम हुआ कि तुम्हारी बहू को कर्मचन्द द्वारा लाए गए रजाई के अबरे तथा मलमल के थान पसंद नहीं आए हैं। तुम्हारे ताऊ (कर्मचन्द) तो पुराने ज़माने के आदमी हैं। वे नए फ़ैशन की चीज़ें खरीदना नहीं जानते। दादा जी ने परेश को इस समस्या से निपटने के लिए यह सुझाव दिया कि तुम बेला को लेकर बाज़ार चले जाओ और उसे उसके पसंद के कपड़े दिला लाओ।

परेश ने दादा जी को अपनी समस्या बताते हुए कहा

कि इस घर में बेला का मन नहीं लगता। परेश की यह बात सुनकर दादा जी ने उसे समझाते हुए कहा कि अभी बेला को इस घर में आए थोड़े दिन ही हुए हैं। इतनी जल्दी उसका मन कैसे लग सकता है। दादा जी परेश से यह भी कहते हैं कि मन अपने आप नहीं लगता, मन लगाया जाता है। दादा जी ने पुनः कहा कि यदि बहू इस घर में अपना मन नहीं लगाती है तो हमें उसका मन लगाना चाहिए। वह एक बड़े घर से आई है, अपने पिता की इकलौती बेटी है, कभी नाते-रिश्तेदारों में नहीं रही। हमारा संयुक्त परिवार है, यहाँ बहुत-से लोग रहते हैं। इस भीड़-भाड़ में वह घबराती होगी। हम सब मिलकर उसका मन इस घर में लगाएँगे।

परेश ने दादा जी से घर की सभी महिलाओं की शिकायत की क्योंकि वे सभी बेला के व्यवहार से परेशान हैं। वे सभी बेला का अपमान करती हैं और उसकी हँसी उड़ाती हैं। बेला को इस प्रकार उनका हस्तक्षेप करना, आलोचना करना और समय नष्ट करना पसंद नहीं है। वह आज़ादी चाहती है क्योंकि उसे लगता है कि घर के सदस्य उसे पसंद नहीं करते हैं।

परेश के मुँह से परिवार से अलग होने की बात सुनकर दादा जी सिहर उठते हैं। दादा जी को अपने परिवार का टूटना अर्थात परेश का घर से अलग होना बिलकुल मंज़ूर नहीं था इसलिए उन्होंने परेश को बाग वाला मकान देने से इन्कार कर दिया। उन्होंने उसे समझाया कि वह किसी प्रकार की चिंता न करे। वे कोई न कोई हल ज़रूर निकाल लेंगे। वे सबको समझा देंगे। वह स्वयं को परायों से घिरी अनुभव नहीं करेगी। उसे (बेला को) वही आदर मिलेगा जो उसे मायके में मिलता था। परेश को दादा जी की बात उचित लगती है। दादा जी परेश को भी बहू का ध्यान रखने के लिए कहते हैं और समझाते हैं कि तुम भी ऐसी कोई बात मत करना जिससे बहू का मन दुःखी हो। मैं कोई न कोई रास्ता अवश्य निकाल लूँगा। परेश जैसी आपकी इच्छा कहकर चला जाता है।

दादा जी रजवा को आवाज़ लगाते हैं। रजवा के आने पर

दादा जी उसे छोटी बहू के अतिरिक्त सभी महिलाओं को अपने कमरे में भेजने के लिए कहते हैं। धीरे-धीरे परिवार के सदस्य आने लगते हैं। रजवा उनके बैठने के लिए मोढ़े और चटाइयाँ लाकर बिछा देती है। इंदु ने साथ में न आने का कारण बताते हुए कहा कि मैं कपड़े धो रही थी।

दादा जी ने बताया कि मैंने यहाँ सबको एक खास अभिप्राय से बुलाया है। मुझे यह सुनकर दुःख हुआ कि छोटी बहू (बेला) का मन यहाँ नहीं लगता है। दोष उसका नहीं, हमारा है। परिवार में आने वाली छोटी बहू एक शिक्षित, सभ्य और सुसंस्कृत विचारों वाली युवती है। वह परिवार में सबसे छोटी और विपरीत विचारों के कारण तनाव का अनुभव कर रही है। मेरी इच्छा है कि उसे यहाँ भी वही आदर-सत्कार मिले, जो उसे अपने घर में प्राप्त था। सब उसका कहना मानें, उससे परामर्श लें। उसे यह अनुभव न होने दो कि वह दूसरे घर में या किसी दूसरे वातावरण में आ गई है। दादा जी अपने परिवार की तुलना वट वृक्ष से करते हुए उसकी मज़बूती और स्थायित्व की बात भी करते हैं। उन्होंने कहा कि यदि मैंने सुन लिया कि किसी ने छोटी बहू का निरादर किया है, उसकी हँसी उड़ाई है या उसका समय नष्ट किया है तो इस घर से मेरा नाता सदा के लिए टूट जाएगा। सब धीरे-धीरे जाने लगते हैं। दादा जी मँझली बहू और इंदु को रोक लेते हैं। वे मँझली बहू को समझाते हुए कहते हैं कि छोटी बहू (बेला) को खुश रखकर ही परिवार में एकता बनी रह सकती है। वे इंदु से कहते हैं कि तुम्हारी छोटी भाभी बुद्धिमान, सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत हैं। तुम्हें उनका आदर करना चाहिए तथा उनसे ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

दादा जी उन दोनों से कहते हैं कि मेरी यह आकांक्षा है कि परिवार रूपी सब डालियाँ साथ-साथ फले-फूलें अर्थात् परिवार के सभी सदस्य प्रसन्न रहें। वृक्ष से अलग होने वाली डाली की कल्पना से ही दादा जी सिहर उठते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि पेड़ से डाली के अलग हो जाने पर डाली सूख जाती है। इसी प्रकार यदि बहू परिवार से अलग हो गई तो वह भी

सुखी नहीं रहेगी। इंदु, दादा जी से क्षमा माँगते हुए कहती है कि हमारी ओर से आपको कभी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। उनके जाने के बाद दादा जी मल्लू, भाषी और जगदीश को बुलाकर बरगद के पेड़ की कहानी सुनाने लगते हैं। बच्चे दादा जी से कोई नई कहानी सुनने की ज़िद्द करते हैं लेकिन दादा जी उन्हें बताते हैं कि ऐसी कहानी परिवार का, समाज का और राष्ट्र का निर्माण करती है। यह जीवन को सुदृढ़, विशाल तथा महान बनाती है। इतने कहते ही दादा जी हुक्का गुड़गुड़ाने लगते हैं और पर्दा गिरता है।

बच्चो! आज हमने इस एकांकी के दूसरे दृश्य को भी समझ लिया है। सभी छात्र इस एकांकी के पहले दृश्य एवं दूसरे दृश्य को पुनः पढ़ेंगे व समझेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

"मैं कहा करता हूँ न बेटा कि एक बार वृक्ष से जो डाली टूट गई, उसे लाख पानी दो, उसमें वह सरसता न आएगी और हमारा यह परिवार बरगद के इस महान पेड़ की भाँति है --"

प्रश्न (क) वक्ता कौन है? उसके मन में ये विचार किस घटना को देखकर आए?

प्रश्न (ख) वक्ता ने अपने परिवार की तुलना बरगद के पेड़ से क्यों की है?

प्रश्न (ग) 'एक बार वृक्ष से जो डाली टूट गई, उसे लाख पानी दो, उसमें वह सरसता न आएगी' - इस कथन से वक्ता का क्या आशय है?

प्रश्न (घ) उपर्युक्त कथन किस एकांकी से लिया गया है? उसमें एकांकीकार ने क्या संदेश दिया है?

धन्यवाद

[अंतिम पृष्ठ]